

पाठ ०४ : ऐसी भी बातें होती हैं (लता मंगेशकर से साक्षात्कार)

प्रश्नों के उत्तर

रचना से संवाद – मेरे उत्तर मेरे तर्क

१. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

प्रश्न १. लता जी ने अपने पिताजी से क्या-क्या सीखा?

(क) अनुशासन और नियम के साथ जीना

(ख) भय और संशय के साथ जीना

(ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना

(घ) चतुराई और संयम के साथ जीना

- **उपयुक्तता का तर्क:** साक्षात्कार में लता जी स्पष्ट रूप से कहती हैं कि उन्होंने अपने पिता से सबसे ज्यादा 'स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा' और 'सही बातों पर खड़े रहने की हिम्मत' सीखी, जिसके कारण उन्होंने कठिन दिनों में भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया।

प्रश्न २. पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार संभालने का लता जी का निर्णय किस जीवन-मूल्य का द्योतक है?

(क) संघर्ष

(ख) निराशा

(ग) भौतिकता

(घ) कर्तव्यनिष्ठा

- **उपयुक्तता का तर्क:** मात्र १३ वर्ष की अल्पायु में पिता के निधन के बाद अपनी माता और छोटे भाई-बहनों की संपूर्ण जिम्मेदारी उठाना और दिन-रात स्टूडियो के चक्कर काटना उनकी सर्वोच्च कर्तव्यनिष्ठा और पारिवारिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रदर्शित करता है।

प्रश्न ३. "बिल्कुल ठेठ गाँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है..." 'मंगलागौर' के वर्णन से भारतीय समाज की कौन-सी परंपरा उजागर होती है?

(क) संगीत पर आधुनिकता का प्रभाव

(ख) लोकगीतों की लोकप्रियता में कमी

(ग) धार्मिक कार्यक्रमों में संगीत का महत्व

(घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

- **उपयुक्तता का तर्क:** 'मंगलागौर' विवाह के पश्चात नई बहू के आगमन पर आयोजित होने वाला एक सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठान है, जहाँ स्त्रियाँ सामूहिक रूप से पारंपरिक लोकगीत गाकर और नृत्य करके आपसी सौहार्द और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती हैं।

प्रश्न ४. 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' इस कहावत का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

(क) नाव गाँव में नहीं रहती, नदी में बहती है।

(ख) इस नश्वर संसार में सब कुछ नष्ट हो जाता है।

(ग) फिल्मों में गीत गाने से बहुत प्रसिद्धि मिलती है।

(घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

- **उपयुक्तता का तर्क:** लता जी समझाती हैं कि भौतिक मानव शरीर तो नश्वर है और समय के साथ समाप्त हो जाता है, परंतु व्यक्ति द्वारा कला, संगीत या समाज के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्य और उसका नाम युगों-युगों तक जीवित रहते हैं।

प्रश्न ५. कोरस में साथ गाने वाली लड़कियों के साथ लता जी के संबंध कैसे थे?

(क) औपचारिक

(ख) कामकाजी

(ग) आत्मीय

(घ) प्रतिस्पर्धात्मक

- **उपयुक्तता का तर्क:** लता जी बताती हैं कि कोरस की लड़कियां उनके घर जैसी थीं, उनका घर पर आना-जाना था और रिकॉर्डिंग के समय वे सभी एक साथ ज़मीन पर बैठकर सुख-दुख की बातें साझा करती थीं।

प्रश्न ६. लता मंगेशकर के अनुसार बाबा हरिदास और तानसेन की कथाओं से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(क) संगीत द्वारा दीपक जलाए जा सकते हैं।

(ख) मेघराग गाने से वर्षा होने लगती है।

(ग) सुर में वाद्य बजाने से तार टूट जाते हैं।

(घ) संगीत में अपरिमित (असीम) शक्ति होती है।

- **उपयुक्तता का तर्क:** लता जी का मानना है कि यद्यपि उन्होंने स्वयं दीपक जलते नहीं देखा, परंतु संगीत की सीमा अनंत है और इसमें वह असीम आत्मिक शक्ति है जो प्रकृति और मानव मन में अप्रत्याशित बदलाव ला सकती है।

प्रश्न ७. पूरे साक्षात्कार में लता मंगेशकर की जो छवि बनती है, वह मुख्यतः कैसी है?

(क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की

(ख) प्रसिद्धि, परिवार को समर्पित और आत्ममुग्ध

(ग) कठोर सिद्धांतवादी और व्यावहारिक व्यक्ति

(घ) आधुनिकता विरोधी रूढ़िवादी विचारों वाली

- **उपयुक्तता का तर्क:** लता जी के उत्तरों में कहीं भी अहंकार (आत्ममुग्धता) नहीं दिखता; वे अपने छोटे से घर में खुश हैं, अपने संस्कारों (स्वाभिमान) पर अडिग हैं और जीवनपर्यंत संगीत साधना के प्रति पूर्णतः समर्पित रहीं।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न १. "पिताजी उस समय पूछते थे, 'समझ गए न?'... इसके बाद वे कहते थे कि 'अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।" यह प्रसंग पारिवारिक अनुशासन और स्नेह के संतुलन का प्रतीक है। कैसे?

- **उत्तर:** यह प्रसंग दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय परिवारों में अनुशासन का अर्थ शारीरिक हिंसा या गाली-गलौज नहीं था, बल्कि वह सम्मान और नैतिक समझ पर आधारित था। पिता बच्चों की शरारत पर केवल गंभीरता से देखते थे, जिससे बच्चों को अपनी गलती का बोध (डर के बजाय आदर के कारण) हो जाता था। गलती स्वीकार करते ही पिता तुरंत स्नेहपूर्वक उन्हें बाहर जाकर खेलने की अनुमति दे देते थे। यह प्रक्रिया बच्चों के मन में हीनभावना या विद्रोह पैदा किए बिना उनके व्यवहार में सुधार लाती थी, जो अनुशासन और वात्सल्य का उत्कृष्ट संतुलन है।

प्रश्न २. लता मंगेशकर पर अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व का क्या प्रभाव पड़ा? उनके कौन-कौन से कार्यों और व्यवहार में उनके पिता का प्रभाव दिखाई देता है?

- **उत्तर:** लता जी के संपूर्ण जीवन, कला और आदर्शों पर उनके पिता का गहरा प्रभाव था:
 1. **संगीत साधना:** उन्होंने मात्र पाँच वर्ष की आयु में अपने पिता से ही संगीत की प्रारंभिक शिक्षा पाई और पिता की तरह ही संगीत को अपना जीवन मान लिया।
 2. **स्वाभिमानी जीवन:** पिता के दिए संस्कारों के कारण उन्होंने जीवन के सबसे कठिन और विपन्न दिनों में भी कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया और अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया।
 3. **निर्णय लेने की दृढ़ता:** विपरीत परिस्थितियों में सही बात पर अकेले खड़े रहने और सही निर्णय लेने की कला उन्होंने अपने पिता के व्यवहार को देखकर ही सीखी थी।

प्रश्न ३. "मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।" 'नाम आगे बढ़ाने' का लता जी के लिए क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ प्रसिद्धि पाना है या इससे कोई महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी जुड़ा हुआ है?

- **उत्तर:** लता जी के लिए 'नाम आगे बढ़ाने' का अर्थ केवल व्यक्तिगत प्रसिद्धि, धन या कीर्ति कमाना नहीं है, बल्कि अपने पिता द्वारा स्थापित संगीत की महान परंपरा, कलात्मक शुद्धता और नैतिक मूल्यों को पूरी प्रामाणिकता के साथ जीवित रखना और उसे वैश्विक स्तर पर गौरव दिलाना है। इसके साथ एक बहुत बड़ा सामाजिक उत्तरदायित्व जुड़ा होता है—अपनी कला के माध्यम से समाज में मिठास घोलना, नई पीढ़ी को सही संस्कार देना और अपनी सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचकर भी अपनी जड़ों (पारिवारिक संस्कारों) के प्रति विनम्र बने रहना।

प्रश्न ४. किसी भी कार्य को पूरा करने में सहयोगियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। साक्षात्कार के आधार पर बताइए कि लता जी के अपने सहयोगियों के साथ संबंध कैसे थे?

- **उत्तर:** लता जी अपने सहयोगियों, चाहे वे देश के सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक (जैसे नौशाद साहब, अनिल विश्वास) हों या पृष्ठभूमि में गाने वाली सामान्य कोरस की लड़कियाँ, सभी के साथ अत्यंत आत्मीय, मधुर और सम्मानपूर्ण संबंध रखती थीं। वे अपने सीनियर संगीतकारों को पूरा आदर देती थीं और दीवाली के दिन सुबह

तड़के स्वयं उनके घर मिठाई लेकर जाती थीं। वहीं कोरस की लड़कियों को वे अपने परिवार का सदस्य मानती थीं, स्टूडियो में उनके साथ ज़मीन पर बैठकर सहजता से बातें करती थीं और उनके सुख-दुख (जैसे मीना की शादी) में शामिल होती थीं।

साक्षात्कार से उभरता व्यक्तित्व/उभरती छवि

पाठ्यपुस्तक की पंक्तियों से उभरने वाले लता जी के चारित्रिक गुणों का सही वर्गीकरण:

1. "मुझे अपने गाने और रेकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।"

गुण: एकाग्रता, साधना, समर्पण

2. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"

गुण: स्वाभिमान, दृढ़ता, स्पष्टवादिता, आत्मविश्वास

3. "आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है।"

गुण: विनम्रता, सरलता, कृतज्ञता

4. "मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं।"

गुण: दार्शनिकता, स्पष्टता, सत्यनिष्ठा

मेरे प्रश्न (उत्तरों से प्रश्न निर्माण)

१. उत्तर: 'मंगलागौर' जैसे लोक पर्वों में स्त्रियों के बीच गीत, नृत्य और सौहार्द का भाव झलकता था।

- प्रश्न (क): महाराष्ट्र की पारंपरिक लोक-संस्कृति में 'मंगलागौर' उत्सव की क्या विशेषता रही है?
- प्रश्न (ख): विवाह के पश्चात स्त्रियों के आपसी प्रेम, नृत्य और गीतों का रिवाज किस लोक पर्व के माध्यम से निभता था?

२. उत्तर: लता जी का मानना था कि तकनीकी प्रगति के बावजूद पुराने संगीतकारों की सादगी और गहराई अद्वितीय थी।

- प्रश्न (क): तकनीकी रूप से विकसित आज के संगीत की तुलना में लता जी पुराने दौर के संगीतकारों में क्या विशिष्टता देखती थीं?
- प्रश्न (ख): आधुनिक एडवांस तकनीक के युग में भी पुराने समय के संगीत को अद्वितीय क्यों माना गया है?

मेरे अनुभव मेरे विचार

प्रश्न १. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।" क्या आप किसी ऐसी स्थिति से गुजरे हैं जब आपको किसी सही बात पर अकेले खड़ा होना पड़ा हो? कब और क्यों?

- उत्तर: हाँ, पिछले वर्ष हमारे विद्यालय के वार्षिक खेल महोत्सव के दौरान जब हमारी कक्षा की टीम के कप्तान ने खेल भावना के विपरीत जाकर विपक्षी टीम के एक खिलाड़ी को जान-बूझकर गिराने और अंपायर से झूठ बोलने की योजना बनाई, तब मैंने उस गलत बात का कड़ा विरोध किया था। मेरी ही कक्षा के अन्य साथी मुझ पर दबाव बना रहे थे कि "जीतने के लिए सब जायज़ है," परंतु मैं अकेले अपनी बात पर अड़ा रहा और खेल

शिक्षक को सच बताया। मुझे कुछ समय के लिए अकेलापन झेलना पड़ा, परंतु अंततः हमारी टीम ने ईमानदारी से खेल खेला। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं अपनी नैतिकता के आगे नहीं झुका।

प्रश्न २. "बाबा ने जैसा सिखाया था, उस पर हम सभी भाई-बहनों ने चलने का प्रयास किया।" आपके परिवार में भी कोई ऐसी सीख या नियम अवश्य होंगे जिनका पालन आप किसी के याद दिलाए बिना स्वतः करते होंगे, उनके विषय में बताइए।

- **उत्तर:** हमारे परिवार में मेरे दादा जी द्वारा दी गई एक बहुत बड़ी सीख है— "भोजन का कभी अनादर न करना और अपनी थाली में अन्न का एक भी दाना व्यर्थ न छोड़ना।" इस नियम का पालन मैं और मेरे सभी भाई-बहन बचपन से करते आ रहे हैं। चाहे हम घर पर खाना खा रहे हों या किसी विवाह समारोह व दावत में गए हों, हम अपनी थाली में उतना ही भोजन लेते हैं जितनी भूख हो। इसके लिए माता-पिता को कभी याद दिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, यह संस्कार हमारी आदत का हिस्सा बन चुका है।

प्रश्न ३. "पहले दिन गुड़ि बाँधते हैं और नौ दिन तक उत्सव मनाया जाता है।" आप भी अपने घर में किसी पारंपरिक पर्व को विशेष तरीके से मनाते होंगे। उसका वर्णन कीजिए।

- **उत्तर:** हमारे घर में प्रत्येक वर्ष 'छठ पूजा' का महापर्व अत्यंत विशेष और कड़े नियमों के साथ मनाया जाता है। मेरी माता जी इस अवसर पर तीन दिनों का कड़ा निर्जला व्रत रखती हैं। उत्सव की शुरुआत 'नहाय-खाय' से होती है, जिसमें पूरे घर की गहन सफ़ाई की जाती है और मिट्टी के चूल्हे पर सात्विक भोजन बनता है। दूसरे दिन 'खरना' के बाद, तीसरे दिन शाम को पूरा परिवार पीतल के सूपों में ठेकुआ, गन्ना और विभिन्न मौसमी फल लेकर नदी के घाट पर जाता है। वहाँ डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और अगले दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत संपन्न होता है। नदी के घाट पर गूँजते लोकगीत और आस्था का वह वातावरण हमारे पूरे परिवार को एक पवित्र सूत्र में बाँध देता है।

प्रश्न ४. पाठ में आपने पढ़ा कि लता मंगेशकर के बचपन से अब तक उत्सवों से जुड़ी अनेक परंपराएँ बदल रही हैं। कौन-कौन सी परंपराएँ बदल गई हैं? अपने घर-परिवार में बातचीत करके पता लगाइए कि विभिन्न त्योहारों को मनाने के तरीकों में कौन-कौन से बदलाव आ रहे हैं?

- **उत्तर:** पाठ के अनुसार, पहले के समय में मनाया जाने वाला 'मंगलागौर' जैसे पारंपरिक लोक-उत्सव, जहाँ स्त्रियाँ ठेठ गँवई अंदाज़ में सामूहिक रूप से नाचती-गाती थीं, अब आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो रहे हैं। घर-परिवार में बड़ों से चर्चा करने पर त्योहारों में आए निम्नलिखित बड़े बदलाव सामने आते हैं:
 1. **सामूहिकता का स्थान कृत्रिमता ने लिया:** पहले होली या दीवाली पर पूरा मोहल्ला एक जगह एकत्र होकर ढोल-मंजीरों के साथ लोकगीत गाता था, परंतु अब लोग केवल मोबाइल पर 'व्हाट्सएप संदेश' भेजकर औपचारिकता पूरी कर लेते हैं।
 2. **बाज़ारीकरण:** पहले त्योहारों के पकवान (जैसे गुड़िया, मठरी, दीवाली के दीये) घर की महिलाएँ मिलकर बनाती थीं, जिससे आपसी प्रेम बढ़ता था। आज बाज़ार से बने-बनाए रेडीमेड पकवान और

चीनी लाइटें लाने का चलन बढ़ गया है, जिससे त्योहारों की मौलिक और आत्मीय मिठास कम हो रही है।

विधा से संवाद: साक्षात्कार की पड़ताल

(क) साक्षात्कार विधा के मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने वाली पंक्तियाँ:

- साक्षात्कार लेने वाले और देने वाले का नाम: यतींद्र मिश्र (साक्षात्कारकर्ता) और लता मंगेशकर (साक्षात्कार दात्री)।
- आमंत्रण, स्वागत और परिचय: "दीदी, आपके संगीत की अप्रतिम यात्रा पर बातचीत शुरू करते हैं। आप अगर तैयार हों, तो मैं असंख्य शुभचिंतकों की ओर से प्रणाम करते हुए प्रश्न पूछना चाहूँगा।"
- भावनात्मक वातावरण / संस्मरण: जब लता जी अपने पिता की रिकॉर्डिंग की बातें या दीवाली के दिन सुबह साढ़े पाँच बजे नौशाद साहब के घर मिठाई लेकर पहुँचने का वाकया सुनाती हैं।
- समापन: "आज मुझे लगता है कि हे प्रभु! तुमने जो भी दिया, वह बहुत दिया। अपनी कृपा की छाया हर एक कलाकार और नेक इंसानों के ऊपर भी रखना। यही प्रार्थना है।"

(ख) शैली का विश्लेषण (औपचारिक संवाद या आत्मीय बातचीत)?

- उत्तर: यह साक्षात्कार पूरी तरह से 'आत्मीय बातचीत' (Personal and Heartfelt Dialogue) की शैली में है। यद्यपि यतींद्र मिश्र जी पूर्ण आदर के साथ शुरुआत करते हैं, परंतु जैसे-जैसे संवाद आगे बढ़ता है, भाषा अत्यंत सरल, अनौपचारिक और आत्मीय हो जाती है। लता जी अपने बचपन की शरारतें, भाई-बहनों के साथ तकियों का स्वर्ग बनाना, रिकॉर्डिंग स्टूडियो की तकलीफें और अपने सीनियर संगीतकारों के साथ हँसी-मजाक के संस्मरण बहुत खुलकर और खिलखिलाकर हँसते हुए साझा करती हैं। इसमें कहीं भी व्यावसायिक रूखापन नहीं है, बल्कि एक पारिवारिक आत्मीयता की मिठास घुली हुई है।

२. आपका साक्षात्कार

यदि मैं लता जी के इस ऐतिहासिक साक्षात्कार में उपस्थित होता, तो मैं उनसे निम्नलिखित तीन अलग और विशिष्ट प्रश्न पूछता:

1. प्रश्न १ (सांस्कृतिक चेतना पर): "दीदी, आज की युवा पीढ़ी जो पाश्चात्य (वेस्टर्न) संगीत के प्रभाव में आकर अपनी जड़ों को भूल रही है, उसे शास्त्रीय और भारतीय सुगम संगीत की ओर वापस आकर्षित करने के लिए आप माता-पिता और विद्यालयों को क्या सलाह देना चाहेंगी?"
2. प्रश्न २ (कलात्मक तनाव प्रबंधन पर): "जब आप पर एक ही दिन में तीन-चार अलग-अलग स्टूडियो में जाकर विपरीत भावों (एक तरफ करुण गीत और दूसरी तरफ चुलबुला गीत) के गाने रिकॉर्ड करने का दबाव होता था, तब आप मानसिक रूप से अपने स्वरो की शुद्धता और भावों को कैसे संतुलित रखती थीं?"
3. प्रश्न ३ (देशभक्ति की भावना पर): "जब आपने कड़ाके की ठंड में देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के सम्मुख 'ऐ मेरे वतन के लोगो' गीत गाया था और उनकी आँखों में आँसू आ गए थे, उस ऐतिहासिक क्षण के समय आपके अपने भीतर क्या भावनाएँ चल रही थीं?"

विषयों से संवाद

(क) १३ वर्ष की आयु में लता जी के एक दिन की कठिन दिनचर्या की कल्पना

सन् १९४२ में पिता के अचानक देहावसान के बाद मात्र १३ वर्ष की सुकुमार आयु में लता जी के कंधों पर संपूर्ण परिवार (माँ और चार छोटे भाई-बहन) का भार आ गया था। उस दौर में समाज में स्त्रियों का फिल्मों में काम करना अत्यंत निंदनीय माना जाता था। ऐसे विपरीत माहौल में लता जी सुबह भोर में पाँच बजे उठकर घर का थोड़ा काम निपटाकर, बिना पर्याप्त भोजन किए या सूखी रोटी का एक टुकड़ा खाकर घर से निकलती होंगी। जब में लोकल ट्रेन या बस के भाड़े के चंद सिक्के होते होंगे, जिन्हें वे बड़ी किफ़ायत से खर्च करती होंगी।

एक स्टूडियो से दूसरे और तीसरे स्टूडियो तक पैदल या भारी भीड़ के बीच दौड़ते हुए उनके पैरों में छाले पड़ जाते होंगे। पुरुष-प्रधान फिल्म इंडस्ट्री के स्टूडियो के कोलाहल और धुएँ के बीच एक छोटी बच्ची को अपनी सुरक्षा और गरिमा की रक्षा के लिए हर पल सतर्क (चौकन्ना) रहना पड़ता होगा। दिन-भर की रिकॉर्डिंग की मानसिक और शारीरिक थकान के बाद, रात को देर गए जब वे घर लौटती होंगी, तो चेहरे पर थकान के बावजूद भाई-बहनों को देखकर मुस्कुराती होंगी ताकि उन्हें ढाँढस बंधा सके। उनका यह एक-एक दिन साक्षात् 'जीवन-संग्राम' जैसा उथल-पुथल भरा और अत्यंत चुनौतीपूर्ण था।

(ख) हमारे विद्यालय व समुदाय में 'सहयोग और सामूहिकता' वाले कार्यों की सूची

सामूहिकता और टीम-वर्क के बिना समाज का चलना असंभव है, इसके मुख्य उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. **विद्यालय की खेल प्रतियोगिताएँ व सांस्कृतिक उत्सव:** जैसे एनुअल फंक्शन या क्रिकेट मैच, जहाँ कोरस गायकों की तरह ही पर्दे के पीछे काम करने वाले साउंड, लाइट और स्टेज मैनेजर्स का सामूहिक सहयोग ही कार्यक्रम को सफल बनाता है।
2. **सामुदायिक स्वच्छता अभियान व आपदा प्रबंधन:** जैसे बाढ़ या महामारी के समय पूरे मोहल्ले का एक साथ मिलकर राहत सामग्री बाँटना, सफाई करना।
3. **पारंपरिक विवाह और सामाजिक अनुष्ठान:** जैसे 'मंगलागौर' या छठ पूजा, जहाँ पड़ोस की महिलाएँ मिलकर पकवान बनाती हैं और सामूहिक गीत गाकर रिवाज निभाती हैं।

शास्त्रीय संगीत (पारिभाषिक शब्दावली)

1. शब्दावली के प्रामाणिक अर्थ और उदाहरण:

- **राग:** विशिष्ट नियमों, आरोह-अवरोह और सुंदर स्वरों का वह संयोजन जो सुनने वाले के चित्त को प्रसन्न और मुग्ध कर दे। (उदाहरण: राग जयजयवंती, राग भैरवी)।
- **सुर:** संगीत की वह मधुर और स्थिर ध्वनि जिसकी सहायता से संगीत का निर्माण होता है। मुख्य स्वर सात हैं—सा, रे, ग, म, प, ध, नि।
- **बंदिश:** शास्त्रीय संगीत में राग के नियमों के अंतर्गत शब्दों, ताल और स्वरों में बंधी हुई एक निश्चित सुंदर रचना या बंदोबस्त।
- **अभंग:** महाराष्ट्र की लोक-संस्कृति में विठ्ठल देव (विष्णु) की स्तुति में गाए जाने वाले विशिष्ट छंद या भक्तिगीत, जिन्हें संत तुकाराम या ज्ञानेश्वर ने रचा।

- **सोहर:** उत्तर भारत (विशेषकर बिहार और उत्तर प्रदेश) में बच्चे के भाग्यशाली जन्म के शुभ अवसर पर गाया जाने वाला पारंपरिक मंगलगीत।
- **फाग / धमार:** वसंत ऋतु और होली के पावन पर्व पर ब्रज और ग्रामीण क्षेत्रों में गाए जाने वाले मस्ती और उमंग से भरे लोकगीत।
- **बधावा:** किसी के यहाँ शुभ कार्य, जैसे विवाह या पुत्र-रत्न की प्राप्ति पर बधाई देने के उद्देश्य से गाया जाने वाला मांगलिक गीत।

२. हमारे क्षेत्र का एक पारंपरिक 'सोहर' (बधाई गीत)

"जुग-जुग जीयसु ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो।
ललना लाल होइहें कुलवा के दीपक, मनवा में आस जागल हो॥
आजु के दिनवां सुहावन, मगल गान होइहे हो।
सासू सुहागिनि मंगावेली कंगनवा, ननद गोटी खेले ली हो॥"

साइबर सुरक्षा (Procedural Advice - पृष्ठ ८०)

प्रश्न: एआई (AI) वॉइस चेंजिंग और डीपफेक तकनीक के माध्यम से होने वाली धोखाधड़ी से कैसे बचें?

- **उत्तर:** आज के तकनीकी युग में साइबर ठग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करके हमारे प्रियजनों की हू-ब-हू आवाज़ बनाकर पैसों की माँग करते हैं। इससे बचने के नियम निम्नलिखित हैं:
 1. **आपातकालीन स्थिति में 'क्रॉस-वेरिफिकेशन' करें:** यदि आपके किसी परिजन की आवाज़ में फोन आए कि "मैं बहुत बड़ी मुसीबत में हूँ, तुरंत पैसे ट्रांसफर करो," तो घबराकर तुरंत पैसे न भेजें। फोन काटकर उनके किसी अन्य करीबी नंबर या लैंडलाइन पर कॉल करके हकीकत का पता लगाएँ।
 2. **पारिवारिक 'सीक्रेट कोड' (गुप्त शब्द) तय करें:** अपने परिवार के सदस्यों के बीच एक ऐसा गुप्त शब्द या कोड वर्ड तय करके रखें जो केवल आपको पता हो। ऐसी किसी भी संदेहास्पद कॉल आने पर सामने वाले से वह कोड पूछें।
 3. **अपरिचित कड़ियों (Links) पर क्लिक न करें:** अपनी बैंकिंग जानकारी या ओटीपी किसी के साथ साझा न करें। यदि कोई धोखाधड़ी हो जाए, तो तुरंत गृह मंत्रालय के आधिकारिक पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराएँ।

हम ऐसे भी बोलते हैं (सांकेतिक भाषा)

प्रश्न १. क्या आपके जीवन में भी कोई ऐसा व्यक्ति है जो बिना कुछ बोले सिर्फ नजरों या संकेतों से ही आपको समझा देता है?

- **उत्तर:** हाँ, मेरे जीवन में मेरी माता जी ऐसी ही अद्भुत क्षमता वाली महिला हैं। जब हमारे घर में कोई बाहरी अतिथि या रिश्तेदार आए होते हैं और मैं अनजाने में बचपन में कोई अनुचित ज़िद करने लगता हूँ या जोर से बोलने लगता हूँ, तो माता जी बिना एक भी शब्द बोले केवल अपनी आँखों को थोड़ा बड़ा करके मुझे गंभीरता से देखती हैं। उनका वह एक गंभीर संकेत ही मुझे यह समझाने के लिए पर्याप्त होता है कि मुझे तुरंत

शांत हो जाना चाहिए और शालीनता से बैठना चाहिए। इसमें कोई डाँट नहीं होती, परंतु एक गहरा आदर और अनुशासन छिपा होता है।

प्रश्न २. यदि कोई व्यक्ति बिना बोले (संकेत भाषा में) आपको कुछ समझा रहा है, तो आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

- **उत्तर:** यदि कोई दिव्यांगजन या मूक-बधिर व्यक्ति मुझसे सांकेतिक भाषा (Sign Language) में संवाद करने का प्रयास कर रहा है, तो मैं उसके प्रति निम्नलिखित तीन नैतिक व्यवहार प्रदर्शित करूँगा:
 - **धैर्य (Patience):** मैं उसकी बात को बीच में काटे बिना या झुंझलाए बिना पूरी शांति और एकाग्रता से उसके हाथों और चेहरे के हाव-भाव को देखूँगा।
 - **जिज्ञासा व एकाग्रता:** मैं उसकी भाषा को समझने की सच्ची इच्छा रखूँगा और यदि कोई संकेत समझ न आए, तो विनम्रता से दोबारा पूछूँगा।
 - **समानुभूति (Empathy):** मैं उसे यह अहसास कराऊँगा कि वह समाज से अलग नहीं है। मैं उसके प्रति दया का नहीं बल्कि समानता और आदर का भाव रखूँगा।

सृजन (Creative Writing)

१. टाइम मशीन यात्रा: सन् १९४५ में लता जी के साथ बिताया एक दिन (डायरी विधा)

दिनांक: २४ मई १९४५

स्थान: बॉम्बे (मुंबई)

समय: रात्रि १०:०० बजे

आज का दिन मेरे जीवन का सबसे अविस्मरणीय दिन रहा, क्योंकि मैंने अपनी 'टाइम मशीन' का पहिया घुमाकर सन् १९४५ के कालखंड में प्रवेश किया। आज मेरी मुलाकात तत्कालीन उभरती हुई १५-१६ वर्ष की सुकुमार गायिका लता मंगेशकर से हुई। उस समय का बॉम्बे आज की गगनचुंबी इमारतों से दूर, शांत और ट्राम गाड़ियों की आवाज़ों से घिरा था। लता जी ने उस समय एक बेहद सादी सूती नौवारी साड़ी पहन रखी थी, चेहरे पर कोई चकाचौंध नहीं, केवल आँखों में अगाध साधना और स्वाभिमान की चमक थी।

दोपहर को उन्होंने मुझे अपने छोटे से घर में बिठाया, जहाँ दोपहर के भोजन में महाराष्ट्र का पारंपरिक सादा पोहा और वरण-भाट (दाल-चावल) बना था। भोजन के बाद वे मुझे गोरेगाँव के एक पुराने रिकॉर्डिंग स्टूडियो ले गईं। वहाँ आज जैसी एडवांस कंप्यूटर तकनीक नहीं थी; चारों तरफ बड़े-बड़े वाद्ययंत्रों के साथ संगीतकार लाइव धुनों की रिहर्सल कर रहे थे। लता जी ने कड़े पसीने और स्टूडियो की उमस के बीच पूरे सात घंटे खड़े रहकर एक गीत की तर्ज को जतन से साधा। शाम को उन्होंने मुझे अपने पिता पं. दीनानाथ जी के पुराने रिकॉर्ड्स ग्रामोफोन पर सुनाए। आज मुझे समझ आया कि इस सादगी और कड़े संघर्ष के बीच ही सुरों की वह अमर मल्लिका तैयार हो रही थी, जो आगे चलकर 'भारत रत्न' बनने वाली थी।

२. लता जी के अंतिम संदेश पर भावनात्मक प्रतिक्रिया (अनुच्छेद)

"साक्षात्कार के अंत में लता जी का यह दार्शनिक कथन कि 'मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं, उसे तो जाना ही है,' पाठक के हृदय को करुणा और जीवन की शाश्वत सच्चाई से भर देता है। यह केवल एक संदेश नहीं, बल्कि एक महान साधिका का अपनी कला और नियति के प्रति सर्वोच्च समर्पण है। लता जी ने जीवनभर सुरों की जो मिठास हमारे कानों में घोली, उसने करोड़ों टूटते हुए मनों को जीने की नई प्रेरणा दी। उनका भौतिक शरीर आज भले ही हमारे बीच न हो, परंतु जब तक इस धरा पर संगीत, नदियाँ और आकाश शेष हैं, उनकी आवाज़ 'ऐ मेरे वतन के लोगो' और 'आएगा आने वाला' के माध्यम से हवाओं में तैरती रहेगी। मराठी कहावत 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' के अनुसार उन्होंने अपने कर्मों से अपने कुल और पूरे राष्ट्र का नाम विश्व पटल पर अमर कर दिया है। उनके इस महान अवदान के प्रति हमारा पूरा राष्ट्र सदैव कृतज्ञ रहेगा।"

भाषा से संवाद: व्याकरण की बात

(क) 'हाथ' शब्द से जुड़े मुहावरे और उनके वाक्य प्रयोग

1. हाथ में आना (नियंत्रण या वश में होना): "कड़ी मेहनत और सही रणनीति अपनाने के बाद आखिरकार सफलता रोहन के हाथ में आ गई।"
2. हाथ का मैल होना (धन या भौतिक वस्तु को तुच्छ समझना): "सच्चे और स्वाभिमानी इंसानों के लिए धन-दौलत तो केवल हाथ का मैल होती है, आत्मसम्मान सर्वोपरि है।"
3. हाथ से हाथ मिलाना (एकजुट होकर सहयोग करना): "देश पर आई किसी भी प्राकृतिक आपदा के समय सभी देशवासियों को हाथ से हाथ मिलाकर कार्य करना चाहिए।"
4. हाथ साफ़ करना (चोरी करना या मौका देखकर लाभ उठाना): "मेले की भीड़-भाड़ का फायदा उठाकर शातिर जेबकतरे ने राहगीर के बटुए पर अपना हाथ साफ़ कर दिया।"
5. हाथ से निकल जाना (अवसर या नियंत्रण खो देना): "समय रहते यदि पढ़ाई न की जाए, तो सुनहरा अवसर हाथ से निकल जाता है।"
6. हाथ धो बैठना (किसी प्रिय वस्तु या जीवन को हमेशा के लिए खो देना): "तेज़ रफ्तार और लापरवाही से गाड़ी चलाने के कारण कई युवा अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं।"

(ख) कहावत, अनुवाद और भाव-परिवर्तन

१. बुद्धिर्यस्य बलं तस्या"

अनुवाद - "जिसके पास बुद्धि है, वास्तव में बल भी उसी के पास है।" (अर्थात् बुद्धि ही सबसे बड़ा बल है)।

अनुवाद के बाद भाव परिवर्तन:

- **गंभीरता से सहजता:** मूल रूप में यह कहावत एक 'सूत्र' की तरह है—अत्यंत संक्षिप्त, अकाट्य और दार्शनिक। हिंदी में अनुवाद होने के बाद इसका भाव अधिक सरल और व्यावहारिक हो जाता है, जिससे यह आम बोलचाल का हिस्सा लगने लगती है।
- **अर्थ का विस्तार:** मूल भाषा में 'बलं' शब्द मुख्य रूप से मानसिक और आत्मिक शक्ति को दर्शाता है। परंतु, हिंदी में 'बल' शब्द सुनते ही आम पाठक के मन में शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की शक्ति का भाव

एक साथ उभरता है। इस प्रकार, अनुवाद के बाद इसका संदेश अधिक व्यापक और जन-साधारण के लिए सुलभ हो जाता है।

(ख) सेतु चित्र (भाषाई समानता - पृष्ठ ८२)

- **सेतु चित्र की व्याख्या:** हिंदी और मराठी भाषा की लिपि देवनागरी होने के कारण दोनों भाषाओं में अनेक ऐसे शब्द हैं जो हु-ब-हू समान अर्थ और समान वर्तनी रखते हैं:

[किनारा १: हिंदी] ===== (सेतु शब्द) ===== [किनारा २: मराठी]
संगीता
स्वाभिमान
आशीर्वाद
संस्कार
नारियल
उत्सव

[किनारा १: संस्कृत] ===== (सेतु शब्द) ===== [किनारा २: हिंदी]
सूर्य
मित्र
जल
पुस्तक
आकाश

गतिविधियाँ (Activities)

1. 'नाम रह जाता है...' पोस्टर की रूपरेखा:

- **शीर्षक:** "नाम रह जाता है..."
- **केंद्रीय विचार:** अमर कर्मों का आलेख.
- **भारतीय भाषाओं में 'नाम' शब्द के रूप:** नाम (हिंदी), नाव (मराठी), नालो (सिंधी), नाउ (पंजाबी), पेरु (तमिल), नामम् (मलयालम), मिङ् (मणिपुरी).
- **सामूहिक प्रतिज्ञा:** "हम भारत के छात्र यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि हम भारत की हर भाषा, उसकी लिपि और उसके बोलने वालों का पूर्ण हृदय से सम्मान करेंगे। कला और भाषा हमें जोड़ती है, बाँटती नहीं।"

2. **भाषा-वृक्ष (Diagrammatic Layout):**

- **जड़:** भारतीय संस्कृति.

- तना व शाखाएँ: हिंदी (शब्द: मित्र), मराठी (शब्द: प्रेम), तमिल (शब्द: वणक्कम), बांग्ला (शब्द: भालोबासा), गुजराती (शब्द: आभार).

3. समाचार बुलेटिन (Script Outline):

- विषय: 'कला जो जोड़ती है, बाँटती नहीं'।
- एंकर (हिंदी): "नमस्कार, आज के विशेष बुलेटिन में आपका स्वागत है। कला सरहदों की मोहताज नहीं होती।"
- रिपोर्टर (अंग्रेजी): "Music has no language. Lata ji's voice connected billions of hearts across India and Pakistan."
- क्षेत्रीय भाषा (मराठी): "कला माणसाला माणसाशी जोडते, संस्कृती समृद्ध करतो।"

4. भाषाई स्मृति पोटली: पाँच कार्डों का संकलन—(१) आई (मराठी - माँ), (२) बाबूजी (हिंदी - पिता), (३) चेन्ना (तमिल - छोटा), (४) जल (संस्कृत - पानी), (५) खैरियत (उर्दू - कुशलता)।

5. स्वर-कोलाज: लता जी के श्वेत-श्याम चित्रों के साथ उनके प्रेरक वाक्यों "स्वाभिमान के साथ जियो" और "मेरा गाना अमर है" का एक कलात्मक संयोजन।


6. समय-रेखा (Timeline of Lata Ji):

- १९२९: इंदौर, माप्रा में जन्म।
- १९३४ (५ वर्ष): पिता से संगीत की प्रारंभिक शिक्षा।
- १९४२ (१३ वर्ष): पिता का निधन, परिवार सँभालने हेतु संघर्ष की शुरुआत।
- १९४९: 'महल' फिल्म के गीत 'आएगा आने वाला' से नए युग का सूत्रपात।
- २००१: भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषिता।
- २०२२: ९२ वर्ष की आयु में नश्वर शरीर का त्याग, संगीत में अमरता।

Links और References

अध्याय के अंतर्गत दिए गए प्रामाणिक वैधानिक और डिजिटल संदर्भों का विवरण निम्नलिखित है:

- राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (Government India): <https://cybercrime.gov.in/UploadMedia/CyberSafetyHindi.Pdf> — एआई वॉइस क्लोनिंग, डीपफेक और ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी की त्वरित शिकायत दर्ज कराने हेतु आधिकारिक मंच।
- 'ऐ मेरे वतन के लोगो' आधिकारिक गीत कड़ी: https://youtu.be/CF_RqQF991w — लता मंगेशकर द्वारा कवि प्रदीप रचित कालजयी देशभक्ति गीत के लाइव गायन का वीडियो संदर्भ।

-  भारतीय भाषा शब्दकोश संदर्भ (Ministry of Education):

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp> — संविधान की आठवीं अनुसूची की विभिन्न भाषाओं के शब्दों की प्रामाणिक तुलना हेतु उपयोगी डिजिटल कड़ी।